• देवता स्वरूप - प्राचीन भारतीय यज्ञ के विधान के अनुसार प्रत्येक मंत्र का कोई न कोई देवता अवश्य होता था। आचार्य सायण की सम्मति मे वेदाध्ययन तथा वेदयापन करने वाले व्यक्तियों के प्रत्येक मंत्र के देवता का समुचित ज्ञान होना चाहिए। मंत्रो से सम्बन्धित देवताओं को समुचितरूप से जाने बिना किसी भी वैदिक अथवा लौकिक कृत्य का फल प्राप्त नहीं होता, दैवतज्ञ ही मन्त्रो के अर्थ समझ सकता है।

→ सम्पूर्ण ऋग्वेद मे स्तुत विभिन्न देवताओं में कुछ सामान्य विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

1) ऋषि ने स्तुति करते समय प्रत्येक वैदिक देव में शक्ति, बुद्धि, सर्वज्ञता, सर्वव्यापकता, तेजास्विता अथवा प्रकाश, औचित्य, परोपकारित्व, अमरत्व आदि गुणो को स्थापित किया है। लगभग सभी प्रमुख देवता सृष्टि की उत्पत्ति, रक्षा तथा संहार करने में सक्षम दिखाई देते है। अर्थात् परवर्ती त्रिदेव का कार्य वेद का एक एक देव ही कर लेता है।

2) गुणो की समानता के साथ-साथ कुछ देवताओं में उपाधियाँ भी परस्पर समान बता दी गई हैं। वज्र धारण करना, गायों (जलों) को मुक्त करना, बल नामक असुर का वध करना आदि मुख्यता इन्द्र के कार्य हैं किन्तु ऋग्वेद में ये कार्य इन्द्र के साथ-साथ अग्नि तथा बृहस्पति के भी कहे गए हैं।

3) समान गुण तथा समान उपाधि धारण करने के कारण ऋग्वेद के देवताओं में परस्पर तादात्म्य एक भी दिखाई देता है। पृथ्वी की अग्नि, विद्युत और सूर्य - तीनो का तादात्म्य एक अग्नि देव में किया गया है।

Scanned with CamScanner

4) वैदिक देववाद में एक विचित्र वैशिष्ट्य यह है कि मन्त्र जिस भी देवता की स्तुति करता है उसी को सर्वोपरि एवं श्रेष्ठतम रूप में वर्णित कर देता है। इसका एक यह भी अर्थ निकाला जा सकता है कि वैदिक आर्य उस एक मूल परम सत्ता परमेश्वर का ही विभिन्न देवताओं के रूप में स्तवन किया करते थे।

5) ऋग्वेद में देवताओं का मानवीकरण भी स्पष्टतया दृष्टिगोचर होता है। देवता भी जन्म लेते हैं व शरीर धारण करते हैं।

6) सभी देवता मनुष्यों की स्तुतियों से प्रसन्न होकर उनके यज्ञ में आकर अग्नि मुख से हविग्रहण करते हैं। प्रसन्न होकर प्रत्येक देवता यजमान के शत्रुओं का संहार करके उसे पुत्र, आयु, आरोग्य, विजय आदि प्रदान करते हैं।

Scanned with CamScanner